व्यवसाय संगठन का अर्थ है — किसी व्यवसाय को स्थापित करने और चलाने की वह व्यवस्था जिसके अंतर्गत उसके स्वामित्व, नियंत्रण, लाभ एवं हानि का निर्धारण होता है।

मुख्यतः व्यवसाय संगठन के पाँच प्रकार होते हैं —

---

1. एकल स्वामित्व (Sole Proprietorship)

इसमें व्यवसाय का स्वामी एक ही व्यक्ति होता है।

वही पूंजी लगाता है, निर्णय लेता है और लाभ-हानि का उत्तरदायी होता है।
उदाहरण: किराना दुकान, छोटे व्यापारी आदि।

विशेषताएँ:

सरल स्थापना

पूर्ण नियंत्रण

सीमित पूंजी

असीमित उत्तरदायित्व

---

2. साझेदारी (Partnership Firm)

इसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर व्यवसाय करते हैं।

सभी साझेदार लाभ और हानि में भागीदार होते हैं।
उदाहरण: लॉ फर्म, अकाउंटिंग फर्म आदि।

विशेषताएँ:

साझेदारी अनुबंध के आधार पर चलती है

संयुक्त निर्णय

सीमित पूंजी से अधिक संसाधन

असीमित उत्तरदायित्व

---

3. संयुक्त हिंदू परिवार व्यवसाय (Joint Hindu Family Business)

यह व्यवसाय भारत में केवल हिंदू परिवारों में पाया जाता है।

इसमें परिवार के सभी सदस्य (कोपार्सनर) शामिल होते हैं, और प्रबंधन “कARTA” करता है।

विशेषताएँ:

उत्तराधिकार द्वारा सदस्यता

‘कARTA’ का नियंत्रण

असीमित उत्तरदायित्व कARTA का

स्थायित्व

---

4. सहकारी संस्था (Cooperative Society)

यह उन लोगों द्वारा बनाई जाती है जो समान आर्थिक हित रखते हैं।

इसका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं, बल्कि सदस्यों की सेवा करना होता है।

उदाहरण: दूध संघ, उपभोक्ता सहकारी समिति आदि।

विशेषताएँ:

स्वैच्छिक सदस्यता

लोकतांत्रिक प्रबंधन

सीमित उत्तरदायित्व

सामाजिक कल्याण पर जोर

---

5. संयुक्त स्टॉक कंपनी (Joint Stock Company)

यह बड़ी पूंजी और कई शेयरधारकों द्वारा गठित की जाती है।

यह एक कानूनी व्यक्ति (Legal Entity) होती है।

प्रकार:

1. निजी कंपनी (Private Company)

2. सार्वजनिक कंपनी (Public Company)

विशेषताएँ:

पृथक कानूनी अस्तित्व

सीमित उत्तरदायित्व

स्थायित्व

प्रबंधन और स्वामित्व में विभाजन

निष्कर्ष:
हर प्रकार के व्यवसाय संगठन के अपने फायदे और सीमाएँ होती हैं। छोटे व्यापारों के लिए एकल स्वामित्व उपयुक्त होता है, जबकि बड़े उद्योगों के लिए संयुक्त स्टॉक कंपनी अधिक उपयुक्त मानी जाती है।